ॐ साई राम

ॐ श्री महा गणपतये नमः

ॐ श्री सद्गुरवे नमः

ॐ श्री साईनाथाय नमः

ॐ श्री महादेव्यै नमः

काले वर्षतु पर्जन्य: पृथ्वी सश्यशालिनी
देशोयम् शोभरहितः ब्राह्मणा: सन्तु निर्भया:
भगवता सन्तु निर्भयाः सज्जन सन्तु निर्भयाः
सर्वे जन सन्तु निर्भयाः
स्वस्ति प्रजाभ्य परिपालयन्ताम्
ज्ञायेन मार्गेण महिम् महीशाः
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं
लोका समस्था सुखिनो भवन्तुर्॥

<u>गुरु पादुका मन्त्रं</u>

ऐंकार ह्रींकार रहस्य युक्त
श्रींकार कूडार्थ महाविभुत्याः
ॐकार मर्म प्रदिपाणिभ्यां
नमो नमः श्री गुरु पादुकाभ्याम् ॥

श्रीगुरुपादुकार्पणमस्तु

****

गुरु तारक मन्त्रं

ॐ ॐकारय नमः शिवाय
ॐ नकाराय नमः शिवाय
ॐ मकाराय नमः शिवाय
ॐ शिकाराय नमः शिवाय
ॐ वकाराय नमः शिवाय
ॐ यकाराय नमः शिवाय

ॐ नमः श्री गुरुदेवाय परम पुरुषाय,
सर्व देवता वशीकराय, सर्वारिष्ठ विनाशाय,
सर्वथ्र मन्त्र छेदनाय, त्रैलोक्यम् वचमानाय स्वहा ॥

श्री दक्षिणा मुर्ती ध्यनम्

गुरवे सर्व लोकानाम् भिशजे भवरोगिणाम्|
निधये सर्व विद्यानाम् श्री दक्षीणामूर्तये नमः ॥

श्री मेधा दक्षीणामूर्ती मूल मन्त्रं

ॐ नमो भगवते दक्षीणामूर्तये, मह्यम्, मेधां, प्रज्ञां प्रयछ्छ स्वहा ॥
ॐ नमो भगवते मह्यम् श्रीयम् प्रज्ञां प्रयछ्छ स्वाहा॥
ॐ महः नमः शिवाय अहः ॐ श्री कीर्ति दक्षीणामूर्तये स्वाहा ॥
ॐ यां नमस्चिन्मय मूर्तये ज्ञानं देहि स्वाहा ॥
ॐ श्रीं सौः श्री सांभ शिवायतय्यम् स्वाहा॥
ॐ ह्रीं ॐ दक्षीणामूर्तये सर्व साय मेधाम् समुत्कर्शय स्वाहा ॥

ॐकार सम्हार मुर्तये नमः स्वाहा ॥
ॐ नमो भगवते दक्षीणामूर्तये त्रिनेत्राय त्रिकालज्ञाय सर्व शत्रुघ्नाय
सर्व अपस्मार वितरणाय धारय धारय मारय मारय भस्मीकुरु भस्मीकुरु
एहि एहि हुं फट् स्वाहा ॥

<u>श्री दक्षिणामुर्ती गायत्री</u>
ॐ दक्षीणामूर्तयेच वद्महे, ध्यानस्थायीच धीमही तन्नो धीशः प्रचोदयात्॥

ॐ नमो भगवते हं दक्षीणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा ॥

ॐ यां नमः चिन्मय मूर्तये दक्षीणामूर्तये नमः॥

ज्ञानानन्दमयंदेवं निर्मल स्फटिकाकृतिं।
आधारं सर्व विद्यानां हयग्रीवं उपास्महे ॥
उद्गीत प्रणवोद्गीत सर्व वागीश्वरेश्वर।
सर्व देवमय चिन्त्य सर्वम् बोधय बोधय॥

ॐ नमो नम शिवायै नमः शिवाय नमः ॐ ॥

ॐ श्री दक्षीणामूर्त्यार्पणमस्तु

****

१) ॐ गणानां त्व गणपति गं हवामहे
कविन्कवीनां मुपवस्रवस्रमम्।

ज्येष्ठ राजम् ब्रह्मणाम् ब्रह्मणस्पतःआन
श्रुण्वन् नूधिभिसीध साधनम् ॥
ॐ श्री महागणाधिपतये नमः

श्री लक्ष्मी गणपती मूलमन्त्रं

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्व जनम्मे वचमानाय स्वाहा॥

विघ्न गणपति मूल मन्त्रं

ॐनमो गणपतये महावीर दसभुज मदनकाल विनाशन मृत्युं हन हन, धम धम, मथ मथ, कालं सम्हर सम्हर, सर्व ग्रहांच चूर्णय चूर्णय, नाहान मोटय मोटय,रुद्र पुत्र, त्रिभुवनेश्वर, सर्वतोमुख हुँ फट् स्वाहा ॥

ॐ गणेश ऋणम् छिन्दी वरेण्यम् हुम् नमः फट् स्वहा ॥

ॐ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदराय एकदन्ताय विघ्न विनाशिने शिव सुताय श्री वरद मूर्तये नमो नमः ॥

श्री गणपती गायात्री

ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुन्डाय धीमही तन्नो दन्तीः प्रचोदयात्।
ॐ तत् पुरुषाय विद्महे वक्रतुन्डाय धीमही तन्नो दन्तीः प्रचोदयात् ॥

ॐ गं महा गणाधिपतये नमः
ॐ त्वम् योग प्रयोग सच्चिदान्नद विराड स्वरूप अन्तर्यामि भगवन्
आगच्छ आगच्छ प्रसीद प्रसीद प्रय्यच्छ प्रय्यच्छ प्रवेशय प्रवेशय
ॐ त्वम् सत्यम्
ॐ त्वम् सर्वम्
ॐ त्वम् गिरिजात्मजम्
ॐ त्वम् रुद्रपुत्रम्
ॐ त्वम् सिद्धि बुद्धि प्रियम्वदम्
ॐ त्वम् मूलाधाराचक्राधिपतिम्
ॐ त्वम् अकार उकार मकार प्रणवतत्व जगत् महा पुरुषम्
ॐ त्वम् आत्मसाक्षात्कार नितयानन्दम्
ॐ गम् नमः नमस् ज्वालस्तेजसे आविराविर्भव
वक्रतुन्ड ज्ञान बोधकाय व्यासप्रियाय
कर्माशयान् रण्धय रण्धय
श्री वल्लभ प्रयोग चक्रायस्वाहा
अभयं अभयं आत्मनिभूयुष्ठाः
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमः
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद
सर्व जनम्मे वचमानाय स्वाहा॥
ॐ महा गणपति इदंनमम ॥

****

रक्तज्वाला जडाधरम् शशिधरम् रक्तांग तेजोमयम्

हस्ते शूल कपाल पाश डमरुम् लोकस्य रक्षाकरम्
निर्वाणम् सुनवाहनम् त्रिनयनम् आनन्द कोलाहलम्
वन्दे भूतपिशाच नाद वडुकम श्रीः क्षेत्रस्य भालम् शिवम् ॥

सुवानध्वजाय विद्महे शूलहस्ताय धीमही तन्नो भैरव प्रचोदयात् ॥

oश्री श्री श्री रक्ष भैरवी समेत रक्ष भैरवाय नमः॥
श्री श्री श्री आकाश भैरवी समेत आकाश भैरवाय नमः॥
श्री श्री श्री अमृत भैरवी समेत अमृत भैरवाय नमः॥
श्री श्री श्री स्वर्ण आकर्शण भैरवी समेत स्वर्ण आकर्शण भैरवाय नमः॥
ॐ अं क्षं आकाश भैरवाय स्वाहा ॐ अं क्षं आकाश भैरवाय हुँ फट स्वाहा॥

ॐ क्षं क्षां क्षीं क्षैं क्षौं क्षं क्षः क्षेत्रभालाय नमः॥

अं आं ईं क्षं ईं आं अं महाभैरवाय आपत्तुधारणाय
महामृत्युंज्याय अपमृत्यु दोशान निवाराय निवाराय
वज्र देहम देहि देहि क्षं हुँ फट स्वाहा ॥

ॐ क्षं महा भीषण भैरवाय आप्पत्तु धारणाय
महारक्षकाय क्षं क्षां क्षीं सर्वतो रक्ष रक्ष मां
महा भयंकराय सर्व भूत प्रेत बाधान
निवारय निवारय क्षं महाबलाय हुं फट सवाहा॥

" सहस्रपाणी पत्वक्त्रम् सहस्रद्रय लोचनम्
सर्वाभीष्ट प्रधम् देवम् वन्दे आकाश भैरवम्॥"

मरगत मणिनीलम् किंकणी जालमालम्
प्रकडित मुखमीचं भानु सोमाग्नी नेत्रम
हरिहर मसीकेडत्रय क्रतण्डाग्र हस्तम्
विधुतर महिभूषं वीरभद्रं नमामी ॥

वन्दे भालम् स्पटिक सदरुशम् कुण्ड्लोत भासी वक्त्रम्।
दिव्याक्लपैर नवमणी मयै किंकिणी नुपुराटयै।
धीप्राकारम् विचनवधनम् सुप्रसन्नम् महेरतम।
हस्ताबजाबयाम् वटकटमानीसम् शूल कडेगौ तधानम्॥

<u>श्री शिव पंचाक्षरी मन्त्रं</u>

ॐ नमः शिवाय

<u>श्री शिव स्तुति</u>

नम्स्ते अस्तुभगवन् विश्वेश्वराय, महादेवाय,
त्र्यम्बकाय, त्रिपुरान्तकाय, त्रिकाग्नि कालाय,
कालाग्नि रुद्राय,नीलकन्ठाय, मृत्युञ्ंजयाय
सर्वेश्वराय, सदाशिवाय, शंकराय, श्रीमन् महादेवाय नमः॥

<u>श्री शिव गायत्री</u>

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे, महा देवाय धीमही, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

<u>मृत्युन्ज्य मन्त्रं</u>

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम् ऊर्वारुकमिर बन्धनम्
मृत्योर मूक्षिय मामृतात्

ॐ तत् सत् श्री महा रुद्रार्पणमस्तु

****

ॐ ह्रीं क्षं भक्ष भक्ष ज्वाला जिह्वे कराळ दंश्ट्रे
उग्र प्रत्यंगिरे ह्रीं क्षं फट् स्वाहा॥

ॐ उग्रे उग्रे प्रत्यंगिरे अग्नीं प्रयोगे रं ह्रीं मगंळकरीं
क्षं सर्व शत्रु बाधान् हन हन हुं फट् स्वाहा ॥

ॐ क्षं ऐं हन हन जव जव सुन सुन नम नम
जा जा जं जं प्रत्यंगिरे क्षं हुँ फट् स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महा लक्ष्मी कमल धारिण्यै सिंह वाहिन्यै स्वहा ॥

ॐ नमो भगवती अप्रतीचक्रे जगत् सम्मोहनकारी सिद्धे सिद्धार्ते
क्लीं किल्ने मद द्रवे सर्व कामर्थ साधिनी।
आं ईं ऊं हितकारी यशस्करी प्रभंकरी मनोहरी वशंकरी
श्रूं ह च भ्रूं धूं श्रूं द्रां द्रीं अप्रतीचक्रे फट् विचक्राय भगवतिये स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवती देवाधिदेवाय नमः।
सिंह व्याघ्र रक्ष वाहने कटी चक्रित मेघले
भगवती चंद्राधिपतये भगवती कण्ठाधिपतये भगवती
ठनं ठनं ठनं भगवती शब्दाधिपतये भगवतिये स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवती ज्वाला मालिनी देवदेवी सर्व भूत संहार कारिके
जातवेदसी ज्वलन्ती ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल
र र र र र र र ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुँ फट् स्वाहा ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छोटाणी स्थल वासिनी ज्योति स्वरूपिणी
ब्रह्म विष्णु रुद्र ऐक्य रूपिणी सकल दृष्टि दोष निवारिणी
सकल शत्रु संहार रुपिणी सकल अष्टैश्वर्य प्रदायिनी
श्री दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती स्वरूपिणी
श्रीयौवन श्री सौन्दर्य लहरी स्वरूपिणी मूकांबिका ध्यान स्वरूपिणी
श्री छोटाणीकर भगवती ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्री छोटाणीकर भगवतियै स्वाहा॥

ॐ ह्रीं कृष्ण वाससे सिंह वदनी महावदनी महा भैरवी
सर्व शत्रु कर्म विध्वसिनी पर मंत्र छेदिनी सर्व भूत दमनी
सर्व भूतान् बंध बंध सर्व विघ्नान् छिंदी छिंदी
सर्व व्याधी निकरंध निकरंध सर्व दुष्टान् भक्ष भक्ष
ज्वाल जिह्वे कराळ वक्त्रे कराळ दंष्ट्रे प्रत्यंगिरे ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ज्वल ज्वल शूलिनी दुष्ट ग्रह हुं फट् स्वाहा॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ज्वल ज्वल शूलिनी महा भद्र काल्यैय नमः ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमो भगवती वर वरदे श्री विभूतये स्वहा ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्रीं ह्रीं श्रीं श्री महालक्ष्मीयै नमः॥
महा लक्ष्मै कमल धारिण्यै सिंह वाहिन्यै स्वहा ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे
ज्ञान वैराग्य सिद्ध्यर्थे भिक्षां देहीच पार्वती ॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महा नील सरस्वति भारती भार्गवी लोक माये
सरसवाणी उदया
हिमाचल सिम्हाचल गरुडाचल शेषाचल वेदाचल विन्ध्याचल
व्याघ्राचल नृसिंहाचल नारायणाचल अरुणाचल घटिकाचल
महामेरु पर्वत वर्धिनी
ईश्वरी ललिता परमेश्वरी राज राजेश्वरी कामिनी
कामेश्वरी कामाक्षी त्रैलोक मोहिनी प्रवेशय प्रवेशय प्रयच्छ प्रयच्छ
गायत्री सावित्री वग्देवी बगुळामुखी आगच्छ आगच्छ प्रसीद प्रसीद
क्रोध जिह्वाम् स्थम्भय स्थंभय हंसध्वनी हंस रूपिणी हंसवाहिनी
सत्य धर्म सम्वर्धिनी हरिणी सूलिनी कपालिनी महिशासुर मर्धिनी
हे जय दुर्गे अमृतवर्षित विन्ध्यवासिनी आहि आहि येहि येहि
यशस्विनी यामिनी चन्डिनी प्रयोगिनी प्रळयकाळरात्री
सर्व दुष्ट ग्रहान् मारय मारय ध्वंसय ध्वंसय नाशय नाशय
हे स्वर्ण आकर्षण भैरवी श्री चक्र निलयधारी
श्रीं महा लक्ष्मीं वरदे वरदे वरदात्मिके
स्वर्ण धन धान्य वृद्धि कुरुकुरु
हे नयन तारे मृगनयनी नयना देवी
सर्व दृष्टि दोषान् निवारय निवारय
चिन्तपूर्णी ज्वालामुखी वज्रेश्वरी चामुण्डे
वैश्णवी मानसा देवी काळिका
हे शाकंबरी शीतला देवी धूमावती मात्तंगी भुवनेश्वरी
अकार उकार मकार नारायणी

हे जीवधारी परमेश्वरी ह्रीम् माम् रक्ष रक्ष
ॐ ऐं महा श्रीविद्ये सर्व विद्याम् बोधय बोधय
शोडसी बाला त्रिपुर सुन्दरी सुधा वन सुधा वन मोहिनी वसुन्धरा
वारही लं सकल सम्पत्करी मोक्ष प्रदायी
हे जगदम्बे हे जगन्माते जननी शिवरंजिनी
हे भगवती अन्नपूर्णी हे चन्डिका परमेश्वरी
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महा नील सरस्वत्यै नमः।
वौषट् हुम् फट् स्वहा स्वहाहा॥

ॐ ज्ञान स्वरूपिण्यैच विद्महे महा सरस्वतैच धीमही तन्नो नीला प्रचोदयात्॥

ॐ वाक्देवीच विद्महे विरिन्ञिपत्नीच विद्महे तन्नो वाणीः प्रचोदयात्॥

****

ॐ नमो भगवते महासुदर्शन चक्रराज देव देव अनपाय
अकट विकट रवि उग्र चण्ड प्रचण्ड भीषण भैरव भगवन
ज्वल ज्वल दह दह पच पच वनमालीन् क्षीराब्दी नायक
ॐ नमो भगवते परीति प्रहरणाय सकल पादक दुषरकिरणाय
कासी क्षेत्र निभरहणाय बाणसुर बाहवान
दवाग्नये अपरिमिति दिव्यास्त्र तेजोतपाटनाय
कल्पान्त धहनाय श्री महाविष्णवे लक्ष्मीसकान्ताय
नासन कर्ते सर्व लोक चरणयाय ह्रां ह्रीं हूं हन हन हुँ फट स्वाहा॥

श्री षतमुखाग्नि सुदर्शन मन्त्रं

ॐ आ चक्राय स्वाहा
ॐ वी चक्राया स्वाहा
ॐ सू चक्राय स्वाहा
ॐ भी चक्राय स्वाहा
ॐ शट् चक्राय स्वाहा
ॐ ज्वाल चक्राय स्वाहा
सुदर्शनाय विद्महे ज्वाल चक्राय धीमही
तन्नो ज्वाल चक्र प्रचोदयात् ॥

श्री सुदर्शन ध्यानम्

श्री सुदर्शन महा ज्वाला कोटि सूर्य समप्रभा।
अज्ञान अन्धस्य मे देवा, विष्णोर् मार्ग प्रदर्शय॥

श्री सुदर्शन गायत्री

ॐ सुदर्शनाय विद्महे, महा ज्वालाय धीमही
तन्नस् चक्र प्रचोदयात्॥

श्री सुदर्शन मूल मन्त्रं

ॐ श्रीं, ह्रीं, क्लीं, कृष्णाय गोविन्दाय गोपी
जन वल्लभाय, पराय, परम पुरुषाय परमात्मने
परकर्म मन्त्र तन्त्र यन्त्र औषध अस्त्र शस्त्राणि
संहर संहर। मृत्योर् मोचय मोचय।
ॐ नमो भगवते महा सुदर्शनाय दीप्त्रे,

ज्वाला परीताय सर्वदिक् शोभणकराय,
हुँ फट् ब्रह्मणे परंज्योतिषे स्वाहा॥

<u>श्री सुदर्शन मूल मन्त्रं</u>
ॐ सहस्रार हुम् फट्॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीकरा श्रीकरा श्रीं कुरु कुरु
महा श्रीकर नारायणाय स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवते महा सुदर्शन महाचक्राय महा ज्वालाय
दीप्ति रूपाय सर्वतो रक्ष रक्षमां महाबलाय स्वहा ॥

ॐ नमो भगवते महा सुदर्शन भो भो चक्र
दुश्टम् धारय धारय दुरितम् हन हन पापं दह दह
रोहं मर्धय मर्धय आरोग्यम् कुरुकुरु
ॐ ॐ रां रां रीं रीं फट् फट् दह दह हन हन भीषय भीषय नमः ॥

ॐ नमो भगवते महासुदर्षन वासुदेवाय धन्वन्त्रे अमृत कलश हस्ताय सर्वाभय विनाशाय सर्व रोग निवारणाय त्रैलोक्य निधये श्री महा विष्णु स्वरूपाय श्री धन्वन्त्री स्वरूपाय श्री श्री श्री औषध चक्र नारायणाय स्वाहा॥

ॐ श्रीं हन हन ॐ ह्रां हन हन ॐ ह्रीं हन हन
ॐकार हन हन सुदर्शन चक्र सर्व जन वश्यं कुरु कुरु
ह्रीं टह टह ह्रीं टह टह हुँ फट् स्वाहा ॥

महा वशीकर चक्राय विद्महे महा ज्वालाय धीमही
तन्नो वशीकर प्रचोदयात् ॥

ॐ नमो भगवते महासुदर्शन कू कू मोम् मोहय मोहय हं मोहय मोहय
यं मोहय मोहय वं मोहय मोहय रं मोहय मोहय लं मोहय मोहय
ह्रीं टह टह ह्रीं टह टह हुँ फट् स्वहा ॥

ॐ श्री सुदर्शनार्पणमस्तु

****

<u>अघोर नृसिंह मंत्रं</u>

ॐ ह्रीं श्रौं उग्रं वीरं महाविष्णुम् ज्वलंतम्
सर्वतोमुखम् स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर
घोर घोरतर तनुरूप तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट
कह कह वम वम बन्धय बन्धय खादय खादय हुँ फट्
नृसिंहम् भीषणं भद्रं मृत्यु मृत्युम् नमाम्यहम्॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रौं नमो भगवते महा नृसिंहाय
कराळ दंष्ट्र वदनाय सर्व विघ्नान् पच पच स्वहा ॥

ॐ नमो भगवते महा नृसिंहाय नमः।
नमस् ज्वालस् तेजसे आविर् आविर् भव
वज्र नख वज्र धम्मष्ट्राय कर्मासयन् रण्धय रण्धय तमोग्रः चक्रतः स्वहा।
अभयं अभयं आत्मनिभूयुष्ठाः। ॐ श्रौं नमः उग्रं वीरम् महाविशणुं
ज्वलन्तम् सर्वतोमुखं नृसिम्हं भीशणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहं
ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा॥

****

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री कूर्म नारायाणाय
महा सुदर्शनाय महाबलाय महाविष्णवे।
अमृतोत्भवाय अमृततेजसे वं
महाधन्वन्त्रे महमृत्युंजयाय।
अति सुन्धर महा जगन्मोहिनी स्वरूपाय
देवप्रियाय दुरितम् हन हन
पापम् दह दह रोहम् मर्धय मर्धय।
सर्व भूत प्रेत वेदाळ पिशाचान्
विनाशय विनाशय ध्वम्सय ध्वम्सय।
श्री लक्ष्मी जनन कारणाय श्रिवत्साय जगत् रक्षकाय
महा मंगळ स्वरूपाय क्षीराबधी नाधाय
वासुदेवाय परवासुदेवय अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायकाय,
जयाय विजयाय प्लीं ध्लीं क्लिं स्लिं ह्लिं
श्रीकूर्मनारायणाय हुँ फट् स्वाहा ॥

अमृतोत्भवाय विद्महे महाजगन्मोहिनैस्च धीमही तन्नो कूर्मः
प्रचोदयात् ॥

****

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुँ फट् स्वहा॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हनुमते राम दूताय लंकापुरी विध्वंसनाय
अंञ्ना गर्भ संभूताय। साकिनी डाकिनी विध्वंसनाय

खिल खिल भू भू कारिणे विभूषणाय
हनुमत् देवाय ॐ ऐंह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं हुँ फट् स्वाहा ॥

****

ॐ नमो भगवते वराह रूपाय भुर्भुवसुवर्पतये भूपति
त्वम्मे देहि तधापय स्वाहा ॥

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं हं ईं श्री वराह मुखाय
मुख वराहाय श्री कपट वराहाय स्वाहा
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं हं ईं श्री आदि वराह रूपाय
रूप आदि वराहाय श्री दिव्य वराहाय स्वाहा
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं हं ईं श्रीयज्ञ वराह स्वरूपाय
स्वरूप यज्ञवराहाय श्री विष्णु वराहाय स्वाहा
ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं हं ईं श्री भू वराह सत्य रूपाय
सत्य रूप भू वराहाय श्री लक्ष्मी वराहाय स्वाहा
ॐ वं वं वं वं वराह वराह वराह वराह स्वाहा
ॐ रं रं रं रं राहव राहव राहव राहव स्वाहा
ॐ हं हं हं हं हवरा हवरा हवरा हवरा स्वहा
ॐ लं लं लं लं धम्मष्ट्र धम्मष्ट्र वक्र धम्मष्ट्राय
लोक समस्त सकल सम्म्पत्कराय पुत्र पौत्राधिवृधिकराय
ॐ श्रीं लक्ष्मी वराह परब्रह्मणे नमः स्वाहा ॥

धनुर्धराय विद्महे वक्र धम्मष्ट्राय धीमही
तन्नो वराह प्रचोदयात् ॥

ॐ सं सां सं सां सं सां सर्पनारयणाय स्वाहा॥
ॐ सं सां सीं सैं सौं सः सर्प भगवतियै स्वहा ॥

ॐ सहस्र शीर्षाय विद्महे विष्णु तल्पाय धीमही तन्नो नाग प्रचोदयात् ॥
ॐ नाग राजाय विद्महे नाग देवाय धीमही तन्नो नाग प्रचोदयात् ॥

मातृ देवो भव पितृ देवो भव
आचार्य देवो भव अतिथी देवो भव ॥

ॐ वेदात्मनाय विद्महे वेदमयाय धीमही तन्नो बृहस्पति प्रचोदयात्॥

ॐ वागीस्वराय विद्महे हयग्रीवाय धीमही
तन्नो हयग्रीयाय (असव) प्रचोदयात्॥

ॐ अमृतोद्भवाय विद्महे महा अमृत देवाय धीमही
तन्नो धन्वन्त्री प्रचोदयात्॥

ॐ अमृतोत्भवाय विद्महे महा जगन्मोहिनैस्चधीमही
तन्नो कूर्मः प्रचोदयात् ॥

ॐ महा काल्यैच विद्महे शिव पत्नीच धीमही तन्नो महकाली प्रचोदयात्॥
ॐ वाक्देवीच विद्महे विरिञ्जि पत्नीच धीमही तन्नो वाणी प्रचोदयात् ॥

ॐ भद्र भद्राय विद्महे शूल हस्ताय धीमही तन्नो वीरभद्र प्रचोदयात्॥

ॐ ह्रीं भुवनेश्वरियै नमः॥

ॐ श्रीं श्रीनिवासाय नमः॥
ॐ ह्रीं गोविन्दाय नमः॥
ॐ क्लीं वेंकटेश्वरायै नमः॥

ॐ निरंजनाय विद्महे निराभासाय धीमही तन्न श्रीनिवास प्रचोदयात् ॥
विना वेन्कटेशं ननाथो ननाथ सदा वेन्कटेशं स्मरामि स्मरामी
हरे वेन्कटेश प्रसीद प्रसीद प्रियं वेन्कतेश प्रयच्छ प्रयच्छ ॥

ॐ दामोदराय विद्महे रुक्मिणी वल्लभाय धीमही तन्नो कृष्ण प्रचोदयात्॥

ॐ दासरधाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमही तन्नो राम प्रचोदयात् ॥

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे सुवर्ण पक्षाय धीमही तन्नो गरुड प्रचोदयात् ॥

ॐ आन्जेयाय विद्महे वायु पुत्राय धीमही तन्नो हनुमन्त प्रचोदयात् ॥

ॐ दक्षिणामुर्तीच विद्महे ध्यानस्थायीच दीमही तन्नो धीश प्रचोदयात् ॥

ॐ वज्र नखाय विद्महे दीर्घ दघष्ट्राय धीमही तन्नो नारसिंह प्रचोदयात् ॥

ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्र नखाय धीमही तन्न सिंह प्रचोदयात् ॥

ॐ सालिवेषाय विद्महे पक्षीराजाय धीमहीतन्न शरभ प्रचोदयात् ॥

ॐ अज्ञान नाशनाय विद्महे ज्ञान प्रकशाय धीमही तन्नो गुरु पादुका प्रचोदयात् ॥